



अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार



रजि.न.34300/80

संख्या 235

श्री विजय पुरम, बुधवार, 02 सितम्बर 2026

web: dt.andamannicobar.gov.in

2.00 रूपए

नॉर्थ बे में केज कल्चर को बढ़ावा देने की दिशा में

आईसीएआर—सीआईएआरआई और आइलैंड फिशरीज एंड मरीन सर्विसेज स्वयं सहायता समूह के साथ समझौता

श्री विजय पुरम, 1 सितंबर।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद—केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर—सीआईएआरआई), श्री विजय पुरम, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह ने दक्षिण अण्डमान के नॉर्थ बे में समुद्री मछली केज कल्चर के प्रदर्शन, प्रचार—प्रसार और तकनीकी सहायता के लिए 31 अगस्त, 2026 को आइलैंड फिशरीज एंड मरीन सर्विसेज स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य वैज्ञानिक समुद्री कृषि पद्धतियों को क्षेत्रीय स्तर पर अपनाने की सुविधा प्रदान करना तथा केज आधारित मछली पालन की क्षमता को स्थानीय मछुआरों और स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के लिए एक व्यवहार्य और टिकाऊ आजीविका विकल्प के रूप में प्रदर्शित करना है।

आईसीएआर—सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर ने समझौता ज्ञापन के अंतर्गत प्रस्तावित सहयोग के क्षेत्रों पर चर्चा की और स्वयं सहायता समूह को संचालन के स्तर, सेवाओं एवं लाभों तक पहुंच तथा पहल की दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ाने के लिए सहकारी समिति के रूप में आगे बढ़ने पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया।



आईसीएआर—सीआईएआरआई के मत्स्य विज्ञान प्रभाग के प्रमुख डॉ. एम. मुरुगानंदम ने बताया कि यह सहयोग वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञता को क्षेत्रीय स्तर के हितधारकों के अनुभव एवं उद्यमशीलता के साथ जोड़ने में सहायता करेगा।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. किरुबाशंकर ने केज पालन के लिए उपयुक्त संभावित क्षेत्रों तथा सुरक्षित और प्रभावी केज कल्चर के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण सावधानियों एवं स्थल—विशिष्ट पहलुओं के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्रवीणराज, वैज्ञानिक श्री चित्तरंजन राउल और डॉ. जेस मारिया विल्सन ने मछली स्वास्थ्य

शेष पृष्ठ 4 पर

निगरानी, रोग निगरानी तथा केज आधारित प्रणालियों के माध्यम से समुद्री मछली पालन के विकास के क्षेत्र में आईसीएआर—सीआईएआरआई द्वारा जारी पहलों पर प्रकाश डाला। सहयोग के तहत ये तकनीकी सेवाएं स्वयं सहायता समूह को प्रदान की जाएंगी।

आईसीएआर—सीआईएआरआई की टीम ने बताया कि वह तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करेगी और मत्स्य विज्ञान प्रभाग के माध्यम से समुद्री कृषि पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (एआईएनपी) के अंतर्गत निर्मित एवं उपलब्ध कराए गए एचडीपीई गोलाकार समुद्री केज में एशियाई सीबास (लेट्स कैल्केरिफर) के पालन का प्रदर्शन करेगी।

इस सहयोग से अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के स्थानीय मछुआरों एवं स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के बीच प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, क्षमता निर्माण, उद्यमशीलता तथा उन्नत प्रौद्योगिकियों को क्षेत्रीय स्तर पर अपनाने को मजबूती मिलने की उम्मीद है, जिससे वैज्ञानिक, टिकाऊ और आर्थिक रूप से व्यवहार्य समुद्री कृषि पद्धतियों को बढ़ावा मिलेगा। यह द्वीपों की परिस्थितियों में समुद्री मछली केज कल्चर के प्रदर्शन, अर्थव्यवस्था और स्थिरता से संबंधित क्षेत्र—आधारित आंकड़े एवं ज्ञान उत्पन्न करने के लिए एक मंच भी प्रदान करेगा।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि समझौता ज्ञापन पर आईसीएआर—सीआईएआरआई की ओर से डॉ. जय सुंदर तथा आइलैंड फिशरीज एंड मरीन सर्विसेज स्वयं

सहायता समूह की ओर से सचिव श्री महादेव मल्लिक और सदस्य श्री परशुराम मोहंती ने हस्ताक्षर किए। वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री डी. करुणाकरन ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर और दस्तावेजों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया में समन्वय किया। कार्यक्रम का समन्वय श्री चित्तरंजन राउल और डॉ. जेस मारिया विल्सन ने किया।

सहयोग के एक भाग के रूप में आईसीएआर—सीआईएआरआई का मत्स्य विज्ञान प्रभाग केज आधारित समुद्री मछली पालन के प्रमुख घटकों को शामिल करते हुए तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करेगा, जिसमें केज की स्थापना, मूरिंग तथा परिचालन प्रबंधन, जल गुणवत्ता की निगरानी एवं प्रबंधन, मछली स्वास्थ्य एवं रोग निगरानी, चारा की गुणवत्ता एवं प्रमाणीकरण, भंडारण घनत्व एवं भंडारण पद्धतियां, आहार एवं आहार प्रबंधन, वृद्धि एवं जीवित रहने की निगरानी, जैव-सुरक्षा एवं रोग की रोकथाम, केज कल्चर प्रणालियों का वैज्ञानिक प्रबंधन तथा मछलियों के जीवित रहने, वृद्धि एवं उत्पादन में सुधार के लिए तकनीकी हस्तक्षेप शामिल हैं।

आइलैंड फिशरीज एंड मरीन सर्विसेज स्वयं सहायता समूह में 10 सक्रिय सदस्य हैं। समूह ने पहले ही केज आधारित मछली पालन करने के लिए चार जीआई केज स्थापित कर लिए हैं और टिकाऊ आजीविका गतिविधि के रूप में केज फार्मिंग विकसित करने के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है।